Social bases of education in the context of society :-

मनुष्य ने अपने लंबे इतिहास में एक संगठन का निर्माण किया है। इस संगठन में एक व्यवस्था है जिसमें हमें एक निश्चित प्रकार से रहना और व्यवहार करना पड़ता है। मनुष्य के जिस संगठन में ये सम्बन्ध पाये जाते हैं उसी को समाज कहते हैं।

Otaway ने कहा है — समाज का अर्थ इस तरह से व्यक्त किया है "समाज एक प्रकार का समुदाय या समुदाय का भाग है जिसके सदस्यों का अपने जीवन की विधि की सामाजिक चेतना होती है और जिसमें सामान्य उद्देश्यों और मूल्यों के कारण एकता होती है।" वे किसी न किसी ढंग से संगठित ढंग से रहने का एक साथ प्रयास करते हैं। किसी भी समाज के सदस्यों को अपने-अपने बच्चों का पालन-पोषण करने और शिक्षा देने की निश्चित विधियाँ होती हैं।

शिक्षा और समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

Ottaway के ~~विचार~~ अनुसार - "जैसा समाज का स्वरूप होता है, वैसा ही स्वरूप शिक्षा का होता है।"

शिक्षा समाज के जीवन की सम्पूर्ण विधि पर आश्रित रहती है। अतः इस विधि के बदल जाने पर शिक्षा का बदल जाना स्वाभाविक है। यही कारण है कि विभिन्न प्रकार के समाज में विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती है। उदाहरण के लिए प्राचीन काल का समाज पूर्णतः धार्मिक था। अतः शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को धार्मिक और चरित्रवान बनाना था।

शिक्षा समाज के बच्चों का समाजीकरण करके उसकी सेवा करती है। इसका उद्देश्य युवकों को सामाजिक मूल्यों, विश्वासों और समाज के प्रतिमानों को आत्मसात करने के लिए तैयार करना और उनको समाज की क्रियाओं में भाग लेने के योग्य बनाना है। शिक्षा उनकी सामाजिक चेतना को निश्चित दिशा प्रदान करती है।

शिक्षा समाज के सदस्यों को अपने जीवन की समस्याओं का सामना करने में मदद करती है। शिक्षा बताती है कि उचित प्रकार से जीवन निर्वाह करने के लिए स्वस्थ रहना आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा हमें स्वस्थ रहने में मदद मिलती है। समाज के सदस्यों को शिक्षा के माध्यम से उचित व्यवसायों का चयन करने में मदद मिलती है। इसके लिए विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक संस्थानों का संचालन किया जाता है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि शिक्षा ~~ही माध्यम~~ ही ~~समाज~~ समाज की प्रगति, विकास, परिवर्तन और स्थिरता मुख्य साधन है। इसी प्रकार शिक्षा के सम्यक विकास, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षा विधि तथा

Scanned with CamScanner

सहभागी क्रियाशीलतों के निर्माण में समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। समाज की गतिशीलता के अनुरूप आज की शिक्षा गतिशील होती जा रही है।

समाज का शिक्षा पर प्रभाव :—

① समाज के स्वरूप पर प्रभाव। — समाज का स्वरूप जैसा होता है उसी तरह का स्वरूप शिक्षा का होता है। उदाहरण के लिए अमेरिका में समाज का स्वरूप लोकतंत्रीय है इसके अनुसार शिक्षा स्वतंत्रता, समानता, आदि को ध्यान दिया गया है।

② लोकतंत्रीय समाज का प्रभाव :— लोकतंत्रीय समाजों ने अपने सदस्यों को शिक्षा का समान अवसर देने का अधिक से अधिक प्रभाव किया गया है।

③ सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव

④ शैक्षिक दशाओं का प्रभाव —

⑤ आर्थिक दशाओं का प्रभाव —

⑥ सामाजिक आदर्शों, मूल्यों तथा आवश्यकताओं का प्रभाव भारतीय समाज ने जनतंत्रीय आदर्श को स्वीकार किया है। फलस्वरूप उसकी यह माँग है कि शिक्षा द्वारा ऐसे नागरिकों का निर्माण किया जाय जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व ग्रहण कर सके हैं। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी नेतृत्व के लिए शिक्षा पर बल दिया है।

⑦ सामाजिक दृष्टिकोण का प्रभाव।

शिक्षा का समाज पर प्रभाव —

① सामाजिक विरासत का संरक्षण —

② सामाजिक सुधार और प्रगति

③ सामाजिक नियंत्रण

④ सामाजिक परिवर्तन

(6) बालक का सामाजीकरण

इसके अतिरिक्त शिक्षा समाज के अन्य क्षेत्रों पर भी प्रभाव डालती है। - (1) समाज के स्वरूप को प्रभावित करना (2) समाज की आर्थिक और व्यवसायिक स्थिति को प्रभावित करना (3) समाज की नैतिक एवं धार्मिक स्थिति को प्रभावित करना (4) समाज की राजनीतिक स्थिति को प्रभावित करना (5) सामाजिक परिवर्तनों का कारण बताना तथा उनके लिए निदान ढूढना।

Scanned with CamScanner